जीने को क्या चाहिए

– निधि अजय पचिसिया

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथ लगभग 3–4 साल से काम कर रही हूं। मानवीय मूल्यों की बात सभी सदस्यों को करते देखा है उन्हें परखा है। कोविड के समय में फाउंडेशन द्वारा किया जा रहा सहयोग हम शिक्षकों को आत्मबल प्रदान कर रहा है।

कोविड–19 की सूचना विश्व भर में दिसम्बर 2019 से समाचार पत्र व टीवी चैनल के माध्यम से बतायी जा रही थी। अस्पतालों में दिन पर दिन कोरोना के मामले बढ़ते जा रहे थे। कुछ लोग कोरोना को गम्भीरता से नहीं ले रहे थे। हम सरकारी एडवायजरी का पूर्ण रूप से पालन कर रहे थे। सभी के साथ घर पर समय बिताने के इस मौके का अच्छी तरह उपयोग किया जाए। शुरुआत में तो व्यस्तता भरे जीवन में कुछ पल परिवार के सभी सदस्यों के साथ बिताने से अच्छा लगने लगा। घर में रोजाना नए नए प्रकार के पकवान बनने लगे। खाली समय में ताश, कैरम, चेस, लूडो, सांप–सीढ़ी आदि खेल खेले जाने लगे। परिवार के अन्य सदस्यों, मित्रों के हालचाल पूछने में समय बीतने लगा। थोड़ा समय टी.वी. पर अपने मनपसंद कार्यक्रम देखने में बीत रहा था। जीवन में ऐसा अनुभव तो कभी भी किसी ने महसूस नहीं किया था। कोरोना ने जीवन की भाग–दौड़ वाली जिंदगी को एकदम ठहरा दिया था। देश दुनिया में क्या हो रहा है इसके बारे में सिर्फ टीवी ही एक माध्यम था बाकी चारदीवारी में बंद था। दूध जैसी चीज लाने के लिए भी सोचना पड़ रहा था। अपने लोगों के पास हम थे हालांकि जो लॉकडाउन की वजह से अपने घर नहीं आ पाये वे अकेले रह गए थे।

जो लोग अपने घर से दूर काम व मजदूरी कर रहे थे, उनका काम बंद होने से और फिर कब काम शुरू होगा की अनिश्चितता के चलते प्रवासी मजदूर अपने घर जाने के लिए व्याकुल हो रहे थे। उनको देखकर आंखें भर आयी। दूर–दूर से लोग अपने घर जाने के लिए निकल गए। कुछ टीवी चैनल वाले मजदूरों के पैदल घर जाने की तस्वीरें दिखाने लगे। कोई साईकल से, कोई रिक्शे से, कोई बैलगाड़ी से, कोई ऑटो से, और जिसके पास कोई भी

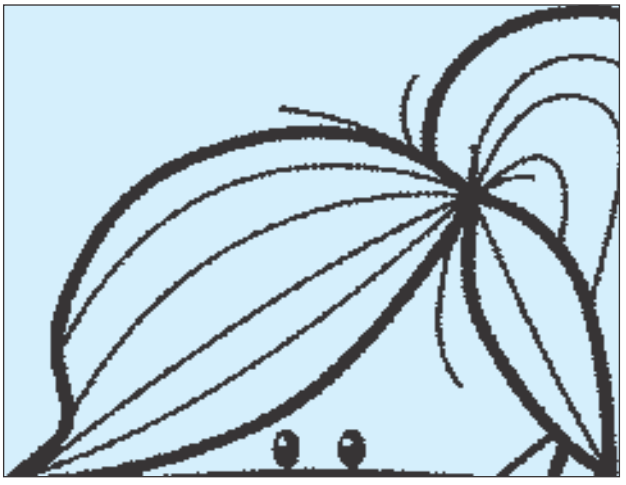

फोटोः गूगल

साधन नहीं वह पैदल ही चलने के लिए मजबूर थे। क्योंकि यहां उनके पास खाने, रहने, दवाई जैसे जरूरी खर्चों के लिए पैसे ही नहीं हैं। लॉकडाउन की वजह से उनके काम बंद हो गए थे और जो थोड़ी पूंजी थी वो उन्होंने भोजन पूर्ति में काम ले ली थी। जब पूंजी खत्म हो गयी तो मकान मालिक को किराया देने के लिए भी पैसे नहीं रहे। दवाई, राशन खरीदने के लिए भी पैसे नहीं रहे। इन मजबूर लोगों का नाम प्रवासी मजदूर पड़ गया है। रास्ते में न खाना है, न पानी है, फिर भी मन में घर जाने की आस। यही आस इन्हें हजारों किलोमीटर बढ़ने का हौसला दे रही थी। इनकी कठिनाइयां कदम–कदम पर बढ़ती जा रही हैं। एक छोटा बच्चा पैदल नहीं चल पा रहा था तब माँ ने बच्चे को अटैची पर लिटा कर उस अटैची को कड़ी धूप में सैकडों किलोमीटर घसीटते हुए ले गई। मजदूरों की हालत देखकर मन बहुत खराब हुआ। मेरे कुछ साथियों की कोविड के चलते डयूटी लगी हुई थी।

कुछ बीएलओ थे उनको उनके क्षेत्र में रह रहे लोगों को भोजन मुहैया कराने का काम दिया गया था। कुछ को सर्वे करने को कहा गया था। जो उन्हें चिकित्सा विभाग के कार्मिकों के साथ करना था। कुछ लोग अस्थायी आवास पर लगे हुए थे। मैं घर पर ही परिवार के साथ थी कभी–कभी अपने साथियों से फोन पर बातचीत कर उनका हाल चाल जान लेती।

इसी बीच शिक्षा विभाग की ओर से स्माइल कार्यक्रम आरंभ किया गया इस कार्यक्रम में बच्चो के अभिभावकों को मैसेज वाट्सएप के माध्यम से जोड़ना था और उनके किए कुछ ऑनलाइन शिक्षण सामग्री हर रोज भेजनी थी। विद्यालय के शिक्षकों ने मिलकर जिन बच्चों के पास एंड्राइड फोन था उन्हें जोड़ा। कुछ को जोड़ने के क्रम में उनसे वाट्सएप वाला नंबर मांगने की कवायद शुरू हुई। बच्चों से बात करने के इस सिलसिले ने दिल दहला दिया था। मैंने कभी भी यह नहीं सोचा था कि बच्चे व उनके परिवार इतनी तकलीफ में हैं। मैंने जब उनसे उनका वाट्सएप मोबाइल नम्बर लेने के लिए कॉल किया तब कुछ अभिभावकों ने अपनी व्यथा बताई। "मैडमजी वाट्सएप के लिए नेट रिचार्ज करने के पैसे नहीं हैं। बच्चों के खाने के लिए तो दो वक्त का भी जुगाड़ करना ही मुश्किल हो गया है। पेट भर खाना खाए कई दिन बीत गए । मजदूरी पर जा नहीं पा रहे। सिलाई नहीं कर पा रहे। फैक्टरी बंद हो गयी है। घर में बीमारों के लिए दवाई लाने के लिए भी पैसे नहीं है। घरों पर गर्भवती महिला है, छोटे दूध पीने वाले बच्चों के लिए भी कोई व्यवस्था नहीं हो पा रही। उधार मिलना बंद हो गया। मालिकों ने फोन उठाना बंद कर दिया। रिश्तेदार भी परेशानी में है। अब ऐसा कोई दरवाजा नहीं है जो हमारी मदद करे।" ऐसा समय कभी नहीं देखा कि घर पर बैठे हैं और खाने के लिए कुछ नहीं, मन कचोट गया जो समय परिवार के साथ सुख से बिताए थे सब भूल गयी। आँखों के आगे मेरे स्कूल के बच्चों की तस्वीर घूमने लगी। उनका बताया हुआ मंजर एक चलचित्र की तरह आखों के आगे घूमने लगा। दिहाड़ी करने वाले लोगों के लिए मुश्किलें बढ़ने लगीं थीं। तकलीफ में तो पूरे देश के लोग ही थे पर कुछ न्यूज चैनल में लोगों के द्वारा जरूरतमंदों को मदद भी की जा रही थी। पर शायद वो मदद करने वाले हाथ हमारे बच्चों की गली–मुहल्लों तक नहीं पहुंच पाए। अब सच कहूं तो अपना खाना–पीना भी बेकार हो गया।

घर पर अजय (पति), आशुतोष (बड़ा बेटा), निखिल (छोटा बेटा) सब से बात की ओर फिर हमने अपने परिचितों से बात करनी शुरू की, स्टाफ सदस्यों व अन्य कई लोगों को स्कूल के बच्चों की व्यथा बताई। सब कुछ करके रास्ता निकालने की सोचने लगे। इसी बीच अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सदस्य से बात हुई जो शिक्षकों की सेफ्टी के लिए किट दे रहे थे उनसे बातचीत के बाद तय किया कुछ जरूरतमन्द बच्चों की पहचान कर राशन वितरण किया जाये। करीब जरूरतमंद 35 बच्चों के परिवारों की पहचान कर मैंने शिक्षकों की मदद से सूची बनाई। सूची में हमारी प्राथमिकता विधवा महिला, जिनके पिताजी गम्भीर बीमारी से ग्रसित है, जिनके घर में ज्यादा बच्चे व वृद्ध हों, इनके नाम पहले लिए गए। राशन किट फाउंडेशन के द्वारा उपलब्ध कराने पर मैं व मेरे पति अजय से मिल कर राशन किट बांटने के लिए केसर चौराहे पर पहुंचे। पर जब लोगों ने देखा राशन की गाड़ी आयी है तो लोगों की भीड़ बढ़ गई। मुझे तो मेरे द्वारा बनाई सूची के अनुसार 35 बच्चों के परिवारों को राशन किट देना था। इसके लिए मुझे पुलिस की मदद लेनी पड़ी क्योंकि धारा 144 के कारण ज्यादा भीड़ भी जमा नहीं होनी चाहिए थी। जिन बच्चों के परिवार को राशन मिला उनके चेहरे की खुशी को शब्दों में बया नहीं की जा सकती है।

लॉकडाउन में हमने जाना कि जीने के लिए सिर्फ दो वक्त की रोटी की ही जरूरत है। आपके पास जितने भी सुख सुविधा के साधन हैं वे नहीं भी हों तो भी जीवन जिया जा सकता है, पर आपको जीने के लिए खाने की आवश्यकता है।

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथ लगभग 3–4 साल से काम कर रही हूं। अब तक सिर्फ अकादमिक भूमिका में ही देखा था, मानवीय मूल्यों की बात सभी सदस्यों को करते देखा है उन्हें परखा है, कोविड के समय में फाउंडेशन द्वारा किया जा रहा सहयोग हम शिक्षकों और शिक्षा विभाग को आत्मबल प्रदान कर रहा है।

(लेखिका राजकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय बाढ़ मोहनपुरा, सांगानेर, जयपुर में अध्यापिका हैं।)